

[इंदौर में श्री चांदमल गुप्ता, भूतपूर्व महापौर के अभिनन्दन समारोह में दिनांक 22.04.2007 दिया गया मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, पूर्व प्रधान न्यायाधीश, भारत का वक्तव्य]

---

श्री चांदमलजी गुप्ता इंदौर की विभूति हैं। उनकी जीवन यात्रा एक मिल श्रमिक के रूप में प्रारंभ हुई। वे एक जुझारू श्रमिक कार्यकर्ता रहे। इन्टक के सचिव रहे। अनेक बार नगर पार्षद निर्वाचित हुए और दो बार इंदौर नगर निगम के महापौर पद पर आसीन हुए। उन्होंने कभी शासकीय अथवा नगर निगम द्वारा प्रदत्त सुविधा का प्रयोग नहीं किया। निगम के महापौर के लिए प्रदत्त वाहन का प्रयोग न कर वे लूना अथवा साइकिल पर निगम जाते थे और नगर भ्रमण करते थे। श्रम की प्रतिष्ठा और लोकहित के कार्य उन्होंने ईश्वर की सेवा मानकर किए। ऐसा सरल ईंदय, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और स्वाभिमानी व्यक्ति आज गुमनामी का जीवन व्यतीत कर रहा है और आयु का आठवां दशक पार कर लेने के उपरांत भी एक साधारण सी सेब-परमल की दुकान चलाकर अपने और अपने परिवार का निर्वाह कर रहा है। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व का अभिनन्दन करने का निश्चय इंदौर के नागरिकों ने किया और तदर्थ एक समिति गठित कर दिनांक 22.04.07 को अभिनन्दन समारोह आयोजित किया।

मंच पर जिन लोगों के बीच मैं बैठा हूं उन्हें देख कर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता का भाव मेरे मन में भर आता है। मेरे दाहिनी ओर पद्मश्री बाबूलालजी पाटोदी हैं जिन पर इन्दौर ही नहीं, प्रदेश ही नहीं, संपूर्ण भारतवर्ष को गर्व है। अतिशयोक्ति नहीं होगी यदि यह कहा जाए कि आज इन्दौर उनके नाम से जाना जाता है। मेरे बाईं ओर श्री एस. एन. सुब्बाराव बैठे हैं। मेरी उनसे मुलाकात 60 या 70 के दशक में हुई थी जब आतंक का पर्याय बन चुकी चंबल घाटी के दुर्दांत दस्युओं का अहिंसात्मक रूप से ईंदय परिवर्तन कर श्री सुब्बाराव ने उनका आत्मसमर्पण कराया था। डाकुओं को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए श्री सुब्बाराव ने उन्हें बागी नाम दिया था। ऐसे दो आत्मसमर्पित बागियों को लेकर श्री सुब्बाराव मेरी जन्मभूमि गुना नगर में आए थे। 30-40 वर्ष हो गए। इस बीच श्री सुब्बाराव से कहीं क्षणिक सी भेंट हुई थी। आज कुछ देर उनके साथ बैठ कर अच्छा लग रहा है। डाकू बदल गए पर सुब्बाराव नहीं बदले। वही खादी की हाफ पैंट, खादी की आधी बांह वाली शर्ट और अहिंसात्मक चमड़े की बनी हुई कोल्हापुरी चप्पल। शरीर में, आयु की बढ़ोतरी से अप्रभावित, वही स्फूर्ति। वाणी में ओज और आज भी कुछ ऐसा कर गुजरने की चाह जो और नहीं कर सकते। सच कहिए तो मैं उनके पास बहुत सतर्क होकर बैठा हूं।

ऐसा न हो कि कहीं हाथ छू जाए और झटका लग जाए। स्फुरण और जागरण करने की ऐसी क्षमता उनमें है। श्री चांदमल गुप्ता, जो दो बार मेयर रह चुके हैं और आज के आयोजन केन्द्र बिन्दु हैं, श्री माथुर, श्री शंकर भैया, श्री महाजन, श्री संजय पटेल जो इस प्रेरक आयोजन के प्रणेता हैं, मंच पर आसीन हैं। इन सबके बीच बैठकर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

रहीमदासजी भक्ति साहित्य के ऐसे संत कवि हुए जिनके काव्य में भरपूर आशावाद छलकता है। वे सदैव Tपर उठने और आगे बढ़ने की बात करते हैं। नैराश्य अथवा नकारात्मकता को तो उनके रचे काव्य में कहीं स्थान मिला ही नहीं है। उन जैसे कवि ने भी एक बार लिखा—

रहिमन अब वे विरख कहं, जिनकी छांह गंभीर।

बागन विच विच देखियत, सेहुड़ कुंज करीर।।

रहीमदासजी लिखते हैं कि अब वे वृक्ष ही नहीं रहे जिनकी छाया गहन गंभीर हुआ करती थी। अब तो सड़क किनारे और बगीचों में भी सेहुड़, करील और कंटीली झाड़ियां मिलती हैं जिनकी न तो छाया होती है, न जिनमें फल लगते हैं और न ही पुष्प, जिनकी गंध पथिक को आकर्षित कर सके। कोई भूला भटका पास आ भी जाए तो उसे कांटों की चुभन ही मिलती है।

मैं साढ़े सत्रह वर्ष न्यायाधीश रहा फिर भी उसके पूर्व के वर्षों का 'वकील' मेरे अन्दर जीवित है। तर्क करने का स्वभाव गया नहीं। यदि रहीमदासजी आज होते तो मैं उनसे यह कहता कि वे वृक्ष जिनकी छाया में स्वतंत्रता अर्जन की गांधीवादी विचारधारा के अहिंसावादी साधक, अथवा सुभाषचंद्र बोस या भगतसिंह की विचाराधारा में विश्वास रखने वाले क्रांतिकारी, विश्राम किया करते थे और अपने पथ पर नवीन Tर्जा के साथ चलने की प्रेरणा प्राप्त किया करते थे, आज भी मौजूद हैं। अंतर इतना आ गया है कि उनकी सघन छाया अब आम रास्ते पर नहीं मिलती क्योंकि वे अब इन्दौर जैसे महानगर में गुमनाम हो कर किसी छोटी सी बस्ती में सेब-परमल बेच कर अपने सिर पर छाया का इंतज़ाम कर रहे हैं। पर धन्य हैं इन्दौर के लोग जो उन्हें ढूंढ लाते हैं और आज के जैसे इस आयोजन में मंच पर प्रस्तुत

करते हैं ताकि हमारी युवा पीढ़ी उनका दर्शन कर स्वयं को धन्य माने और जीवन संग्राम में विजयी होने के साथ-साथ देश और समाज की सेवा के लिए प्रेरणा प्राप्त करे।

कभी-कभी पीड़ा होती है यह देखकर कि जिन्होंने कभी मातृभूमि को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद कराने के लिए अपने जीवन को होम कर देने वाले क्रांतिकारियों को सहारा दिया, समर्थन दिया और अपने साये में विश्राम करने की व्यवस्था की, जिन्होंने गांधी के आह्वान पर घर छोड़ कर मार्ग पर निकल पड़े पुरुष-स्त्री, बाल-आबाल, वृद्ध-युवा, अनुयायी-पथिकों को विश्राम करने के लिए स्थान दिया, जिन्होंने स्वयं स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर कष्ट सहे, वे स्वयं आज अपने सिर पर छाया के लिए मोहताज हैं। ऐसे लोग श्रीमद्भागवत गीता के इस आदर्श को अपने जीवन में जीते हैं और चरितार्थ होते हुए आनंद की अनुभूति करते हैं—‘कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्’। ये वे लोग हैं जो नेकी करते हैं और दरिया में डाल देते हैं। वे किसी के आगे अपने हाथ नहीं फैलाते और न फैला सकते हैं। वे खुश्री का, आत्म-सम्मान का जीवन जीते हैं। वे स्वयं इस हेतु तप करते हैं कि उनके स्नेही स्वजनों और देश भक्तों को कोई आतप न सहना पड़े। ऐसे व्यक्तियों का जीवन हमें शिक्षा देता है और यह पाठ पढ़ाता है कि—

‘हर पेड़ से साये की आरजू न करो,  
जो धूप नहीं सहते वो छांव क्या देंगे’

इंदौर वासियों और विशेषकर अभिनन्दन समिति के सदस्यों का सर्व प्रथम आभार। मनुष्य का स्वभाव और तथाकथित शिष्टाचार (?) विचित्र है। उत्तरदायित्व का बोझ अपने कंधों पर उठाने वाले और स्वयं कष्ट सहकर हमारे कल्याण के लिए दिन-रात लगे रहने वालों को स्मरण करने का हमारा तरीका भी विचित्र है। हमारा वाक् चातुर्य तो देखिए। मैंने दो पंक्तियां कहीं पढ़ीं थीं जो हमारी मानसिकता को बहुत ठीक-ठीक व्यक्त करती हैं—

अजीब सी कशिश है तुममें

कि हम तुम्हारे खयालों में खोए रहते हैं,  
यह सोच कर कि तुम ख्वाबों में आओगे  
हम दिन में भी सोये रहते हैं।

पद्मश्री बाबूलालजी पाटोदी के नेतृत्व में, इस नगर के प्रतिनिधियों की समिति ने श्री चांदमल गुप्ता को अभिनन्दनीय समझा, उन्हें गुमनामी के अंधेरे से निकाल कर मंच पर प्रस्तुत किया और यह आयोजन किया ताकि श्री चांदमलजी के विचार-आचार और त्याग-तप की यशोमय गाथा का हम स्मरण करें, दोहराएं ताकि आज की पीढ़ी को उनके जीवन और कृतित्व से प्रेरणा मिल सके। आज का समाज हिंसा ग्रस्त है। स्वार्थ और पद लोलुपता सर्वव्यापी है। अनेक विरोधाभास प्रतिदिन जन्म लेते हैं और हमें त्रस्त करते हैं। आज के भारत के लिए गांधी बहुत प्रासंगिक हैं और वे सभी अभिनन्दनीय हैं जिनके व्यक्तित्व में गांधीवाद चरितार्थ हुआ हम देख सकते हैं।

कार्यक्रम के प्रारंभ से ही आज यहां श्रेष्ठ आध्यात्मिक वातावरण की रचना हुई है। दीप प्रज्ज्वलन के तुरंत उपरान्त प्रोफेसर सुचिता गंधे से हमने बापू का प्रिय भजन सुना— 'वैष्णवजन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे।' इस भजन में वैष्णव की परिभाषा और वैष्णव का गुण वर्णन सुनकर लगा कि आज हम एक वैष्णव का ही अभिनन्दन करने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं।

अभी कुछ ही समय पूर्व इंदौर के भूतपूर्व महापौर श्री सुरेशजी सेठ बोल रहे थे। उनकी बेबाक अभिव्यक्ति में छिपी व्यथा की अनुभूति मुझे हुई। वे कह रहे थे कि त्याग, बलिदान और न्याय के लिए संघर्ष की कहानियां अप्रासंगिक हो गई हैं; कौन सुनता है, कौन पढ़ता है। मैं सुरेशजी सेठ को आश्वस्त करते हुए कहना चाहता हूं कि वे निराश न हों। देवत्व और दानवता के बीच संघर्ष सदैव होता आया है, आज भी हो रहा है। परिमाण, प्रसंग और परिप्रेक्ष्य में अन्तर हो सकता है। किन्तु, यह व्यथा-कथा सतयुग से कलियुग तक की है। कम-से-कम आज की इस सभा और इस वातावरण से तो उन्हें स्वयं को उत्साहित अनुभव करना चाहिए। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि वे बोलें और लिखें भी। जो वे लिखेंगे उन्हें मेरे जैसे लोग अवश्य

पढ़ेंगे और जो वे कहेंगे उसे वैसे लोग अवश्य सुनेंगे जैसे कि आज यहां इस सभा में उपस्थित हैं।

मेरा संक्षिप्त परिचय देते हुए श्री आनंद मोहन माथुरजी ने तत्कालीन जिला एवम् न्यायाधीश श्री निरंजन प्रसादजी का उल्लेख किया जिनके सामने मैंने गुना में वकालत की थी। उन्होंने कहा है कि श्री निरंजन प्रसाद 'कनस्तर वाले जज' के नाम से मशहूर थे। क्योंकि जब वे जिले में तहसील के मुकाम पर दौरा करने जाते थे तो सार्वजनिक बस से यात्रा करते थे और अपने लिए भोजन बनाने की सामग्री एक कनस्तर में रखकर ले जाया करते थे। स्वयं का वाहन उनके पास था नहीं और शासन से उस समय उपलब्ध नहीं होता था। वे किसी का आतिथ्य स्वीकार नहीं करते थे। मैं आज इस बात का उल्लेख स्वज्ञान के आधार पर करना चाहता हूं कि भले ही कुछ लोगों ने श्री निरंजन प्रसाद को व्यंग या विनोद में कोई उपनाम दे दिया हो किन्तु उनके इन्हीं गुणों के कारण वे सर्वत्र वंदनीय और अभिनन्दनीय बने रहे। अवकाश प्राप्त करने के उपरांत वे स्वस्थ और सुखी हैं और जहां भी जाते हैं सम्मान और श्रद्धा अर्जित करते हैं। न्यायिक क्षेत्रों में श्री निरंजन प्रसाद का उल्लेख एक अनुकरणीय आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनके और श्री चांदमलजी गुप्ता जैसे अनेकों का उदाहरण हमें दर्शाता है कि श्रेष्ठ मानव मूल्यों की महत्ता आज भी है और उनके जैसे व्यक्तित्व आज भी आदर्श और अनुकरणीय माने जाते हैं।

श्री सुब्बाराव को सुना। राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत एक गीत उन्होंने गाया और उनके नेतृत्व में हम सबने उसे दोहराया। गीत गाते-गाते लगा कि शरीर में संचालित हो रहे रक्त के प्रवाह में कहीं स्पंदन हुआ है, कहीं तेजी आई है। एक प्रश्न उन्होंने उठाया और उत्तर के लिए हम सबके बीच छोड़ दिया। 14 और 15 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को ठीक 12 बजते ही भारतवासियों की राजनीतिक स्थिति के साथ ही उनके मानस में भी परिवर्तन हो जाना चाहिए था। भारतवासियों के हृदय में, विदेशी सत्ता द्वारा शासित किसी व्यक्ति के हृदय के स्थान पर स्वतंत्र किन्तु उत्तरदायी और जाग्रत नागरिकों के हृदय का अविर्भाव हो जाना चाहिए था। यह परिवर्तन क्यों नहीं हुआ? कौन इसके लिए जिम्मेदार है? हमें इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए आत्म निरीक्षण करना होगा। स्वयं ही अपने हृदय टटोलने होंगे।

आज का यह आयोजन, आज की पीढ़ी के लिए प्रेरक, सशक्त संदेश है। हम उस स्वतंत्रता का मूल्य समझें जो हमें सहज प्राप्त नहीं हुई है। उन लोगों की कुर्बानी को याद करें जिनके कारण हमें आज़ादी मिली। उन मूल्यों को याद करें जो स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों ने निर्मित किए, जीए और एक आदर्श के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किए। श्री चांदमलजी दो बार इंदौर, जिसे मिनी बॉम्बे या मध्यप्रदेश की वाणिज्य राजधानी (Commercial Capital) भी कहा जाता है, के मेयर रह चुके हैं। उनके विषय में मशहूर है कि उन्होंने कभी मेयर के लिए उपलब्ध गाड़ी का प्रयोग नहीं किया। वे नगर निगम की सभा में और नगर का भ्रमण करने के लिए अपनी लूना या साइकिल पर जाते थे। उनकी लोक जीवन जीने की शैली राजनीति में रचे-पगे आज के नेताओं के लिए चुनौती है। जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को नेतृत्व दिया था, उनमें, हमारे सौभाग्य से कुछ लोग ऐसे हैं जो आज भी जीवित हैं, जिनके दर्शन हम कर सकते हैं। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि उनमें से अनेक अस्वस्थ अथवा रुग्ण हैं और उनके पास इलाज तक के लिए पैसा नहीं है। दूसरी ओर आज राजनीति के क्षेत्र में कुछ ऐसे लोग भी अपने पैर जमाए हुए हैं जिनके पास इतना पैसा है कि जिसका कोई इलाज नहीं है।

दो मित्रों के बीच एक चर्चा का उल्लेख करते हुए, और उस चर्चा को श्री चांदमलजी जैसे व्यक्तित्व को समर्पित करते हुए, अपनी वाणी को विराम दूंगा। एक मित्र ने दूसरे से कहा—‘ मैं बेहतर इंसान बनना चाहता हूं ताकि मूल्यों का सृजन कर सकूं।’ मित्र ने उत्तर दिया—‘ अपने जीवन में मूल्यों का सृजन करो, बेहतर इंसान तो अपने आप बन जाओगे।’

श्री चांदमल गुप्ता शतजीवी हों, सुखी रहें, स्वस्थ रहें। यह शुभकामना मैं किसी उदारता के भाव से नहीं, स्वार्थवश कर रहा हूं। हमें उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन की आवश्यकता है और इसलिए उनका स्वास्थ्य और उनकी दीर्घायु हम सभी के लिए रुचि का विषय है।

.....